❑डिंगळ-छंद

तमाखू री ताड़ना

ऊमरदान लाळस

कवि परिचै

ऊमरदान लाळस रै पिता रौ नांव बख्सीराम लाळस हौ। इणां रै बाळपणै मांय ई माता-पिता रौ सुरगवास होयग्यौ हो। गांव मांय जमीन-जायदाद रै झगड़ा-टंटा सूं काया होयनै अै रामस्नेही संतां रा कंठीबंध शिष्य होयनै जोधपुर आयग्या अर खेड़ापा शाखा रै रामद्वारै में रैवण लागग्या। जोधपुर में रैवता थकां अै दरबार स्कूल मांय चौथी कक्षा तांई पढाई करी। इणरै पछै अै कवि गणेशपुरी रै कनै डिंगळ अर पिंगळ काव्य री शिक्षा ग्रहण करी। दरबार स्कूल रै शिक्षक पं. नर्बदाप्रसाद भार्गव सूं अंगरेजी भासा सीखी।

जोधपुर रै पं. देवराजजी रै पिता सूं अै ज्योतिष अर संस्कृत रौ लूंठौ ग्यान ई हासल कर्‌यौ। मोट्यारपणै मांय अै अेक कानी स्वामी दयानंद सरस्वती रै आर्य समाज रै वैदिक सिद्धांतां रै साथै पाखंड-खंडन रा अकाट्य तरक सुण्या, तो दूजै कानी बेमन साधु बण्योड़ा केई लोगां नैं नजीक सूं देखण रौ मौकौ मिळ्यौ, जिका चादर री ओट में आदर पावण रै साथै व्यभिचार में रळियोड़ा हा। सो अै साधु-वेस नैं तिलांजळी देय दीवी अर गिरस्थ बणग्या। पछै जोधपुर राज्य रै घोड़ां रै रिसाळै मांय नौकर होयग्या। अै दयानंद सरस्वती रै संपर्क में ई रैया अर वांसूं घणा सबळा प्रभावित होया। इणां री प्रतिभा, काव्य-सगती अर वाणी-कला सूं हर कोई प्रभावित होया। इणां री रचनावां पैली बार वि. सं. 1964 में 'ऊमर-काव्य' नांव सूं पोथी रूप में प्रकासित होयी। परोपकारी, साहसी, सत्यवक्ता अर निष्कपट होवण सूं आंरौ व्यक्तित्व घणौ प्रभावशाली हो। वि. सं. 1960 फागण सुदी तेरस नैं कंठबेल री बीमारी सूं आंरौ सुरगवास होयग्यौ।

पाठ परिचै

कुंडळिया अर छप्पय छंदां रै जरियै 'तमाखू री ताड़ना' मांय कवि तमाखू रै साथै-साथै अमल नैं ई बुरौ बतायौ है। विसन तौ कोई ई क्यूं नीं होवै। खोटौ ई होवै। तमाखू खावणिया अर पीवणिया अर अमल लेवणियां रा कांई भूंडा हवाल होवै— इणरौ चित्राम इण काव्य मांय हे। कवि तमाखू पीवणियां नैं कायर पुरुस बताया है। उणां री समाज मांय कांई इज्जत रैय जावै, इणरौ साचौ वरणाव कर्‌यौ है। काव्य रै आखिर में कवि कैवै कै अबै तौ जाग जावौ, जीवण रूपी हीरौ हाथ लाग्योड़ौ है, औ मत गमावौ, क्यूंकै फेर पाछौ मिळण वाळौ नीं है। कैवण रौ मतळब औ है कै इण मिनखाजूण में किणी भांत रौ नसौ-पतौ नीं करणौ चाईजै।

तमाखू री ताड़ना

छप्पय

समज तमाखू सूगली, कुत्तो न खावै काग।
ऊंट टाट खावै न आ, अपणो जाण अभाग।
अपणो जाण अभाग, गजब नहिं खाय गधेड़ो।
शूकर भूंडी समज, निपट निकळै नहिं नैड़ो।
बुरा पशु बच जाय, अहरनिस खाय न आखू।
बडा सोच री बात, तिका नर खाय तमाखू।।1।।

तारत रो निज तनय, नारदो ओर सनाती।
मार अमोलक मित्र, सदा उलटी संगाती।
पाद तणों परधांन, गाद रो सांप्रत गोटो।
असुभ चले को अनुग, मूत रो भाई मोटो।
हिया सूं भीड़ होको हमें, राज भलांई राख लो।
आप सूं अरज इतरी अवस, चुपके पाणी चाख लो।।2।।

भरियो भरियो भणें, प्रथम आरम्भ पहिचांणों।
झाड़ो झाड़ो जपे, जुगत आखर में जांणों।
चुगल सुरन्दर चाव री, टहल नारी घरटूंटी।
मोरो माथो मेल, फेर हिरदै री फूटी।
राम सूं विमुख रोवण रसा, धूम्रपांन मुख में धरै।
तूं देख सिकल होके तणी, क्यूंरि अकल हांणी करै।।3।।

कुंडळिया

पिये तमाखू कापुरस, सापुरसां हिय साल।
सालै निस दिन समझणां, चालै चाल कुचाल।
चाल खोटी चलै चूकग्या नर चतुर।
अहह सोचै न अति दुर्व्यसन दुसह उर।
टुळक आखू अकल घरो घर टीवणां।
पुरस कापुरस जे तमाखू पीवणां।।4।।

होको लेतां हाथ में चेतो गयो चुळाय।
पड़ै धमाधम पदमणां अधमाधम अकुळाय।
उरड़ अकुळाय आघा पड़ै आय अत।
पड़ावै माजनूं लाजनूं खो अपत।
रीछ लै तमाखू दाम दै रोकड़ा।
हकंड भूंडा लगै हाथ में होकड़ा।।5।।

होको लेतां हाथ में चेतो गयो चुळाय।
पड़ै धमाधम पदमणां अधमाधम अकुळाय।
उरड़ अकुळाय आघा पड़ै आय अत।
पड़ावै माजनूं लाजनूं खो अपत।
रीछ लै तमाखू दाम दै रोकड़ा।
हकंड भूंडा लगै हाथ में होकड़ा।।6।।

छप्पय

सूळी देवै सहज, देय दै फांसी देखो।
मिरघी लकवै मांहि, उभय अंतर अवरेखो।
जान्हौ डैरू जोय, बिगत दुख भेद बतावो।
आधासीसी आंख, जुवर कुण सूळ जतावो।
ब्राह्मण गाय हित्य विषै , नीच ऊंच निरखो नमण।
तिम अमल तमाखू तोल लो, कुण घटतो बढतो कमण।।7।।

जेर हवालै जांण, चढावै गद्धै चोड़ै।
बेड़ी लीनां बहै, खास पग धरदै खोड़ै।
बरणैं दोढीवंद्य, देत इक देस निकाळो।
बूडो पाणी बीच, बिसन सूं काया बाळो।
खाणनै पीण आघा खिसक, लागा लपक लकूंदरा।
इम अमल तमाखू है उभै, एकण बिल रा ऊंदरा।।7।।

अमल लियां तन अजक, भाल धरणी भिड़ जासी।
होको पीनां हाय, सहस गुण मन सिड़ जासी।
अमल लियां सूं उदक, एक पीढी मुख आगै।
होको दै निज हाथ, सात पीढी जळ सागै।
नहिं सही जाय जद व्है निडर, कही जाय मोटी कथा।
बय बखत अमोलक व्है वृथा, विमळ हिये खोटी व्यथा।।8।।

तीन लोक को मोल, जाय तन सुकवि जगावै।
हीरो लागो हाथ, पुनरभव फेर न पावै।
ठाला भूला ठोठ, कुबध नहिं छोडै काल्हा।
पुण्य गया परवार, व्यसन जद लागा वाल्हा।
बिन राम भजन खोवै बखत, उलझ अमल होकां अठै।
इक सास अंतपुळ में अहह, कोड़ि महोर मिलणी कठै।।9।।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

सूगली=गंदी, हेय। टाट=बकरी। शूकर=सूअर। तिका=जिका। कापुरस=कायर, कपूत। सापुरस=सज्जन। माजनौ=प्रतिस्ठा, इज्जत। उरड़=आवेग सूं। अमल=अफीम। आफळै=संघर्षरत, जूझणौ। ढोर=पासु। ढोळै=दुरबळ पसु, जका खुद नीं उठै सकै, बेसकै पड़णौ। नासेटू=किणी री तलास में फिरणियौ।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. ऊमरदान लाळस रै पिताजी रौ नांव कांई हौ—

(अ) ईसरराम (ब) बख्सीराम

(स) जसराज (द) तीरथराज

( )

2. ऊमरदान जोधपुर में रैवता थकां किण स्कूल सूं शिक्षा प्राप्त करी—

(अ) चौपासणी स्कूल (ब) उम्मेद स्कूल

(स) दरबार स्कूल (द) एलगिन स्कूल

( )

3. ऊमरदान तमाखू पीवणियां नैं कैड़ो पुरुस बतायौ है—

(अ) कायर (ब) प्रेमी

(स) बुद्धिमान (द) वीर

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. ऊमरदान डिंगळ अर पिंगळ काव्य री शिक्षा किणसूं प्राप्त करी?
2. 'तमाखू री ताड़ना' में कवि किण छंदां रै पाण तमाखू विसन नैं बुरौ बतायौ है?
3. तमाखू पीवणियां री समाज में कांई इज्जत रैवै?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. ऊमरदान लाळस रै पारिवारिक जीवण रौ परिचै देवौ।
2. कवि रै मुजब कुणसा जानवर तमाखू नैं सूगली समझ नीं खावै?
3. ऊमरदान लाळस कुणसै संप्रदाय रै संतां रा कंठीबंध चेला बण्या अर बाद में कांई सीख मिळी?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. कवि तमाखू अर अमल रा कांई-कांई औगुण बताया है? खुलासौ करौ।
2. ऊमरदान रै व्यक्तित्व अर कृतित्व नैं उजागर करौ।
3. ''तमाखू री ताड़ना मांय राजस्थानी रै वैण सगाई अलंकार रौ ओपतौ प्रयोग कथ्य री महत्ता अर सोभा बधावण रौ सामरथ राखै।'' कथन नैं दाखलां समेत पुख्ता करौ।

नीचै दिरीज्या पद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. समज तमाखू सूगली, कुत्तो न खावै काग।
   ऊंट टाट खावै न आ, अपणो जाण अभाग।
   अपणो जाण अभाग, गजब नहिं खाय गधेड़ो।
   शूकर भूंडी समज, निपट निकळै नहिं नैड़ो।

2. पिये तमाखू कापुरस, सापुरसां हिय साल।
   सालै निस दिन समझणां, चालै चाल कुचाल।
   चाल खोटी चलै चूकग्या नर चतुर।
   अहह सोचै न अति दुर्व्यसन दुसह उर।

3. अमल लियां तन अजक, भाल धरणी भिड़ जासी।
   होको पीनां हाय, सहस गुण मन सिड़ जासी।
   अमल लियां सूं उदक, एक पीढी मुख आगै।
   होको दै निज हाथ, सात पीढी जळ सागै।

4. तीन लोक को मोल, जाय तन सुकवि जगावै।
   हीरो लागो हाथ, पुनरभव फेर न पावै।
   ठाला भूला ठोठ, कुबध नहिं छोडै काल्हा।
   पुण्य गया परवार, व्यसन जद लागा वाल्हा।